National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 14-03-2024, Accepted: 07-04-2024, Published: 29-04-2024
Volume 9, Issue 2, 2024, Page No. 11-14

उच्च, मध्यम तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता का अध्ययन

जागृति जायसवाल[1], शिखा खरे[2]
[1] शोध छात्रा, गृह विज्ञान विभाग, नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय, कोटवा, जमुनीपुर, दुबावल, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध निर्देशिका, गृह विज्ञान विभाग, नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय, कोटवा, जमुनीपुर, दुबावल, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
भारत के परिवार नियोजन कार्यक्रम का भार अनुसंधानकर्ताओं, नीति निर्माताओं, सेवा प्रदाताओं, और उपभोक्ताओं के कंधे पर है जिन्हें उत्तम परिवार नियोजन सेवाओं की उपलब्धता को सुनिश्चित करने के लिए अपने–अपने क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता है। परिवार नियोजन का कार्यान्वयन सरल है और इसमें जनसंख्या वृद्धि को रोकने में तरह–तरह की गर्भनिरोधक विधियों की उपलब्धता की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक प्रभावी एवं सफल परिवार नियोजन कार्यक्रम के लिए सरकार, सरकारी संगठनों और निजी सेवा प्रदाताओं के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता होती है। इन सभी संस्थाओं को सुनिश्चित करना चाहिए कि देश के युवा वर्ग और किशोरवय लोगों की लैंगिक और प्रजनन स्वास्थ्य से संबंधित सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो । इसके अलावा, पुरुष दम्पति की सक्रिय भागीदारी से गर्भनिरोधक विधियों के प्रयोग में निश्चित रूप से वृद्धि होगी। अब कार्यवाही का समय आ गया है, और महिलाओं को सशक्त बनाने, परिवार नियोजन के लिए प्रयुक्त विकल्पों को विस्तारित करने, और लैंगिक समानता के लिए प्रत्येक व्यक्ति द्वारा संगठित प्रयास किया जाना चाहिए जिससे प्रत्येक व्यक्ति एक सम्मानजनक जीवन जी सके।

मूल शब्दः उच्च, मध्यम तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर, ग्रामीण महिलाएं,परिवार नियोजन, जागरूकता, मध्यमान, मानक विचलन, सी0आर0 परीक्षण इत्यादि।

ऐसे समुदाय जहां महिलाओं को जीवन जीने के समान अवसर नहीं मिलते हैं या उन्हें डर रहता है कि जमीन, संसाधनों, स्वास्थ्य सेवाओं व सामाजिक लाभों के अभाव में वे और उनके बच्चे जिंदा नहीं रह सकेंगे, वे अधिक बच्चों की चाहत रखते हैं। ऐसा इसलिए होता है कि सामाजिक सुरक्षा के अभाव में केवल बच्चे ही अपने माता–पिता की वृद्धावस्था में देखभाल करते हैं और काम में उनका हाथ बंटाते हैं। लड़का पैदा करने के लिए पारिवारिक दबाव के कारण अनके महिलाओं को बार–बार गर्भधारण करने पर मजबूर होना पड़ता है। हमारे समाज में प्रायः कम बच्चे पैदा करने का सौभाग्य केवल अमीरों को ही प्राप्त है। अन्य महिलाएं बच्चों की संख्या सीमित करना चाह सकती है। यह प्रायः तब होता है जब महिलाओं को शिक्षित होने तथा आमदनी करने के अवसर मिलते हैं और वे पुरुषों से बराबरी से बात कर सकती हैं। चाहे महिला कहीं भी रहती हो, अगर बच्चों की संख्या और उनके पैदा होने के समय पर नियंत्रण है तो वह अधिक स्वस्थ रहेगी। फिर भी, यह निर्णय लेना कि वह परिवार नियोजन का प्रयोग करना चाहती है कि नहीं, उसका अधिकार होना चाहिए क्योंकि उसके शरीर को ही गर्भ का बोझ व बच्चों को पालने–पोसने की जिम्मेदारी सहन करनी पड़ती है। इसके अलावा, महिला का उसके अपने शरीर पर नियंत्रण के अधिकार का हर समय सम्मान होना चाहिए ताकि उसका यौनिक शोषण व उत्पीडन न हो सके।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

जनसंख्या में तीव्र वृद्धि कारण हमारा समाज अपने विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने में आज भी पीछे है। इसी को देखते हुए हमारी सरकारों ने परिवार नियोजन के बहुत से कार्यक्रम संचालित किये हैं जिसका परिणाम यह हुआ है कि अब जनसंख्या वृद्धि में कुछ कमी आयी है। इस परिवर्तन में महिलाओं की भूमिका सराहनीय है। फिर भी समाज में परिवार नियोजन के कार्यक्रमों की जानकारी के अभाव तथा गरीबी के कारण इस समस्या के उन्मूलन में बाधा पहुंची है खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली महिलाओं में इसके प्रति जागरूकता का अभाव अधिक देखा जाता है। प्रस्तुत शोध में भी ग्रामीण महिलाओं में उच्च,माध्यम तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की महिलाओं में परिवार नियोजन के प्रति क्या जागरूकता है इस संबंधमें शोधकर्त्री द्वारा जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है क्योंकि शोधकर्त्री का मानना है कि परिवार नियोजन में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण है अतः इस विषय पर शोध करना आवश्यक है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध–प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।
किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली–भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है, यहाँ साहित्य समीक्षा का अर्थ दिया गया है।

सम्बंधित साहित्य

भार्गव एम0 (2018) ने लोगों द्वारा परिवार नियोजन को अपनाने सम्बन्धी उनकी अभिवृत्ति और व्यक्तित्व का अध्ययन किया।
इस अध्ययन के उपरान्त पाया गया कि जनसांख्यिकीय परिवर्तनशीलता एवं परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्ध यह दर्शाता है कि शहरी निवास तथा आय में वृद्धि परिवार नियोजन के प्रति अनुकूल व्यवहार करने में योगदान देता है। आय व शिक्षा में वास्तविक सम्बन्ध है, जबकि परिवार का

आकार ए0टी0ई0पी0 से प्रतिकूल सम्बन्ध दर्शाता है। परिवार नियोजन के नवीन उपायों के प्रयोग से प्राप्त होने वाली संतुष्टि व परिवार के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति में उच्च सम्बन्ध है।

डेमोग्रेकिक रिसर्च यूनिट (2018) इस शोध का मुख्य उद्देश्य परिवार नियोजन के प्रति लोगों की आदतों एवं भावनाओं का अध्ययन करना था

जिसमें निम्नवत निष्कर्ष प्राप्त हुए

1. शिक्षित महिलायें परिवार नियोजन के अस्थायी तरीकों का प्रयोग पसन्द करती हैं, जबकि अशिक्षित महिलाएं नसबन्दी कराना अधिक उपयुक्त समझती है।
2. परिवार नियोजन द्वारा जनकल्याण कार्यक्रमों में असंतोषजनक उपलब्धि का मुख्य कारण अशिक्षा को पाया गया।

श्रीमती नीरा (2019) ने माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत छात्राओं की परिवार नियोजन कार्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया।

इन्होंने अपने शोध अध्ययन में पाया कि –

1. परिवार नियोजन कार्यक्रम के प्रति अनुसूचित एवं अन्य जाति के छात्राओं के दृष्टिकोण समान ।
2. ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के दृष्टिकोण समान है।
3. छात्रों व छात्राओं के दृष्टिकोण समान है।
4. अलग–अलग विषयों पर तथा सरकारी एवं प्राइवेट विद्यालयों के धार्मिक कट्टरता पर दृष्टिकोण अलग–अलग है।

शोध के उद्देश्य

इस शोध समस्या के निम्नवत उद्देश्य हैं –

1. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं मध्य सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता का अध्ययन करना।
2. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता का अध्ययन करना।
3. मध्य सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

शोध के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. उच्च सामाजिक– आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं मध्य सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्च सामाजिक– आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. मध्य सामाजिक– आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या– जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाईयों के निरीक्षण से होता है। इसमें कुछ इकाईयों का चयन करके न्यादर्श बनाया जाता है । प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित 100 उच्च, 100 मध्य तथा 100 निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की महिलाओं को न्यादर्श के रूप में चुना गया है।

न्यादर्शन (Smpling): जनसंख्या (इकाई, वस्तुओं या मनुष्यों का समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछेक इकाइयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की क्रिया को न्यादर्शन (Smpling) कहते हैं, तथा चुनी हुई इकाइयों के समूह को न्यादर्श (Smple) कहते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में संभाव्यता न्यादर्शन के आधार पर आकड़ों को लिया गया है।

शोध उपकरण

परिवार नियोजन सम्बन्धी जागरूकता मापनी – प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा ग्रामीण महिलाओं की परिवार नियोजन सम्बन्धी जागरूकता का अध्ययन करने के लिए स्वनिर्मित परिवार नियोजन सम्बन्धी जागरूकता मापनी का निर्माण किया है। इस मापनी में परिवार नियोजन से सम्बंधित कुल 40 कथनों का समावेश किया गया है। इस मापनी में परिवार नियोजन के विभिन्न आयामों से सम्बंधित कथनों को रखा गया है। प्रत्येक कथन के सापेक्ष उत्तरदाताओं से हाँ तथा नहीं में प्रतिक्रिया जानने का प्रयास किया गया है।

शोध से प्राप्त परिणामों का सारणीबद्ध व उनकी व्याख्या अग्रवत है–

परिकल्पना 1: उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1: उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता का विवरणः

वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता मान	C-R मान	सार्थकता स्तर
उच्च	100	26.42	1.724	198	.746	.05 स्तर पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।
मध्यम	100	26.24	1.688			

तालिका संख्या 1 में उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका के अनुसार प्रथम समूह उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का है जिसका मध्यमान 26.42 तथा मानक विचलन 1.724 है, जबकि दूसरा समूह मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का है जिसका मध्यमान 26.24 तथा मानक विचलन 1.688 है। इन समूहों के चरों के मध्यमानो की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके आधार पर क्रांतिक अनुपात (C&R) की गणना की गई जिसका मान .746 प्राप्त हुआ है जो की 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से कम प्राप्त हुआ है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि दोनों समूहों की परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इस प्रकार शोधकर्त्री की परिकल्पना संख्या 1 स्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को भी स्वीकार किया जाता है।

परिकल्पना 2: उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2: उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता का विवरणः

वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता मान	C-R मान	सार्थकता स्तर
उच्च	100	26.42	1.724	198	3.947	.05 स्तर पर सार्थक अंतर है।
निम्न	100	25.22	1.773			

तालिका संख्या 2 में उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका के अनुसार प्रथम समूह उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का है जिसका मध्यमान 26.42 तथा मानक विचलन 1.724 है, जबकि दूसरा समूह निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का है जिसका मध्यमान 25.22 तथा मानक विचलन 1.773 है। इन समूहों के चरों के मध्यमानो की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके आधार पर क्रांतिक अनुपात (ब–द) की गणना की गई जिसका मान 3.947 प्राप्त हुआ है जो की 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से अधिक प्राप्त हुआ है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि दोनों समूहों की परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता में सार्थक अंतर है। इस प्रकार शोधकर्त्री की परिकल्पना संख्या 2 अस्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता है।

परिकल्पना 3

मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 3: मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता का विवरणः

वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता मान	C-R मान	सार्थकता स्तर
मध्यम	100	26.24	1.688	198	4.180	.05 स्तर पर सार्थक अंतर है।
निम्न	100	25.22	1.773			

तालिका संख्या 3 में मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका के अनुसार प्रथम समूह मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का है जिसका मध्यमान 26.24 तथा मानक विचलन 1.688 है, जबकि दूसरा समूह निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का है जिसका मध्यमान 25.22 तथा मानक विचलन 1.773 है। इन समूहों के चरों के मध्यमानो की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके आधार पर क्रांतिक अनुपात (C&R) की गणना की गई जिसका मान 4.180 प्राप्त हुआ जो की 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से अधिक प्राप्त हुआ है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि दोनों समूहों की परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता में सार्थक अंतर है। इस प्रकार शोधकर्त्री की परिकल्पना संख्या 3 अस्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष

उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं की परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं की जागरूकता के समान है। यह परिणाम आने का संभावित कारण यह हो सकता है कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का शैक्षिक स्तर लगभग एक समान होता है। जिस कारण ये महिलाएं बड़े एवं छोटे परिवार के फायदे एवं नुकसान को अच्छी तरह से समझ सकती है। अतः ये महिलाएं परिवार नियोजन के संबंध में एक समान जागरूकता रखती है। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं की परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं की जागरूकता से अधिक है। ऐसा परिणाम आने का संभावित कारण यह हो सकता है कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का शैक्षिक स्तर अच्छा होता है, जिस कारण वे छोटे परिवार के महत्व को समझती है जबकि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का शैक्षिक स्तर निम्न होता है तथा वे प्रायः अशिक्षित होती है, जिस कारण ये महिलाएं परिवार नियोजन के महत्व को नहीं समझती है। अर्थात ये महिलाएं परिवार नियोजन के संबंध में अलग–अलग जागरूकता रखती है। मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं की परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं की जागरूकता से अधिक है। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का शैक्षिक स्तर व वातावरण अपेक्षाकृत अधिक अच्छा होता है जबकि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं का शैक्षिक स्तर निम्न होता है। जिस कारण ये महिलाएं परिवार नियोजन के संबंध में अलग–अलग जागरूकता रखती है।

शोध की उपयोगिता

परिवार नियोजन वर्तमान समय की आवश्यकता है इसमें महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है प्रस्तुत शोध से यह जानकारी प्राप्त होती है कि इस कार्यक्रम का व्यापक प्रचार–प्रसार ग्रामीण महिलाओं में आवश्यक है। उनमें इसके प्रति जागरूक करके तथा शिक्षित करके इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन में उनकी भूमिका का निर्धारण करना होगा। शोधकर्त्री द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के उच्च,मध्यम तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की ग्रामीण महिलाओं में इसके प्रति जागरूकता का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में यह प्राप्त किया कि ग्रामीण महिलाओं खासकर निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की महिलाओं को शिक्षित करके तथा इसके प्रति जानकारी देकर परिवार नियोजन के प्रति जागरूक किया जा सकता है जो अपने समाज तथा देश की हित में आवश्यक होगा। शोधकर्त्री को आशा है कि प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष एवं परिणाम ग्रामीण महिलाओं को परिवार नियोजन के प्रति जागरूक करने में लाभकारी सिद्ध हो सकेंगें।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह, डॉ. वृंदा (2016): मानव विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध, पंचशील प्रकाशन, जयपुर ।
2. चौहान, बी.आर. (1988): भारत में ग्रामीण समाज, ए.सी. ब्रदर्स प्रकाशन, उदयपुर ।
3. अग्रवाल, डॉ. नीता – त्रिपाठी, डॉ. आकांक्षा (2017): मानव विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा ।

4. गोयल, डॉ. आभा (2018): मानव विकास, कैलाश पुस्तक भवन, भोपाल।
5. वर्मा, डॉ. भावना – गिरी, मंदीप (2018): मानव विकास व्यवहार एवं व्यक्तित्व, भारती प्रकाशन वाराणसी।
6. डॉ. आशा – सिंह, डॉ. दिव्या गनी (2015): मानव विकास की प्रगति का अध्ययन, वन ओसियन पब्लिकेशन, वाराणसी।
7. Shakeel Ahmad. Muslim attitude towards family planning. Sarup & Sons, 2003.
8. Narain Singh, Surya. Muslim in India. Anmol Publication PVT. LTD., 2003
9. Dr. R.P. Tivari & Dr. D.P. Shukla, "rad, A.P.H. Publishing Corporation, New Delhi, 2008.
10. Dr. Rajani Shrivastava, "स्वास्थ्य प्रजननता एवं परिवार नियोजन के प्रति महिलाओं का निर्णय प्रारुप', शिविर प्रकाशन, 101, चौक खत्रियान, शाहखाकी, मेरठ ।
11. Khan ME. "Family Planning amoung Muslim in India", Published by Ramesh Jain, Manohar Publications, 2, Ansari Road, New Delhi.
12. Krishna Reddy MM. Fertility and Family planning behavior in Indian Society, Kanishka Publication, Distribution, New Delhi.
13. Mukherjee, Biswas, Status of Women as related to family planning journal of population research, 1975, Pub. 2(1).
14. Khan ME. C.V.S., Prasad, "Family Planning Practices in India" Second All India Survey Operations Research Group, Baroda, 1983.